Downloaded From : http://www.cbseportal.com

अत्यंत गोपनीय – केवल आंतिरक एवं सीमित प्रयोग–हेतु

# सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा

## मार्च – 2018

अंक योजना – भूगोल (सैद्धांतिक) कोड संख्या 64/1, 64/2, 64/3

**सामान्य निर्देशः मूल्यांकन करते समय कृपया निम्नलिखित निर्देशों के प्रति सावधानी बरतिए।**

1. अंक योजना मूल्यांकन करने में व्यक्तिपरकता को कम करने हेतु सामान्य दिशा निर्देश प्रदान करती है। अंक योजना में दिए गए उत्तर सुझावात्मक और सांकेतिक हैं । यदि परीक्षार्थी अंक योजना में दिए गए उत्तरों से भिन्न उत्तर लिखता है, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं तो उसे पूरे अंक दिए जाँए ।
2. अंक योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही मूल्यांकन किया जाए, मूल्यांकन कार्य अपनी निजी व्याख्या के अनुसार अथवा अन्य किसी सोच के आधार पर नहीं है । अंक योजना का यथावत पालन किया जाए और उसका उपयोग नियमित रूप से किया जाए ।
3. यदि किसी प्रश्न के उपभाग है तो ऐसे प्रश्न के उत्तरों पर दाँई ओर अंक दिए जाएं । तद्नन्तर उपभागों के अंकों का योग बाँई ओर हाशिए पर लिखकर उसे गोलकृत किया जाए।
4. यदि प्रश्न का कोई उपभाग नहीं है तो उस पर अंक बाँई ओर ही दिए जाएं और उन्हें गोलकृत किया जाए ।
5. प्रत्येक उत्तर के साथ संदर्भ हेतु निर्धारित पाठयपुस्तकों की पृष्ठ संख्या दी गई है, ताकि आवश्यकतानुसार परीक्षक इन पृष्ठों का अध्ययन कर उत्तरों का मूलयांकन तथ्यपरक कर सकें ।

   पाठयपुस्तक – 1. मानव भूगोल के मूल सिद्धान्त, एन.सी.आर.टी.

   पाठयपुस्तक – 2. भारत लोग और अर्थव्यवस्था, एन.सी.आर.टी.
6. मूल्यांकन में सम्पूर्ण अंक पैमाने – 0 से 100 का प्रयोग अपेक्षित है । यदि परीक्षार्थी ने सही उत्तर दिया है तो उसे पूरे अंक देने में तनिक भी संकोच न करें ।



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

**विशिष्ट निर्देश :**

1. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझावात्मक मूल्य बिन्दु दिए गए हैं । ये अपने में पूर्ण उत्तर नहीं हैं । विद्यार्थियों की अपनी अभिव्यक्ति सही है तो तद्नुसार अंक देने चाहिए ।
2. माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार परीक्षार्थी अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की छाया प्रति प्रार्थना पर निर्धारित शुल्क के भुगतान पर प्राप्त कर सकेंगे । सभी मुख्य परीक्षकों/मुख्य परीक्षकों को एक बार पुनः स्मरण कराया जाता है कि वे सुनिश्चित करें कि मूल्यांकन करते समय प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अंक योजना में दिए गए मूल्य बिन्दुओं का कड़ाई से परिपालन किया जाए।
3. सभी मुख्य परीक्षकों/परीक्षकों को निर्दिष्टित किया जाता है कि जब वे उत्तर–पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कर रहे हों और किसी प्रश्न का उत्तर पूरी तरह गलत पाते हैं तो गलत उत्तर के लिए (×) अंकित करना चाहिए और 0 अंक (शून्य) दिया जाना चाहिए ।



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

# सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा

## मार्च – 2018

अंक योजना – भूगोल सेट 64/2

| प्र. सं. | अपेक्षित उत्तर / मूल्य बिन्दु | पृ. सं. | अकं |
|---|---|---|---|
| 1. | **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वायु परिवहन के लाभ**<br>i. वायु परिवहन सबसे तीव्रगामी साधन है ।<br>ii. मूल्यवान पोतभार को तीव्रता से विश्व स्तर पर गतिवान बानाया जा सकता है ।<br>iii. वायु परिवहन ने दुर्गम क्षत्रों में पहुँच बनाकर जुडाव में क्रांति कर दी है ।<br>iv. लम्बी दूरी वाली नाशवान वस्तुओं को लाने – ले जाने के लिए बहुत ही उपयुक्त है।<br>किन्हीं दो बिन्दुओं का उल्लेख अपेक्षित है । | **पा. पु. – 2 पृ. स. – 133** | **½+½=1** |
| 2. | **कोलकाता समुद्री–पत्तन की प्रमुख समस्या**<br>कोलकाता पत्तन हुगली नदी द्वारा लाई गई गाद की समस्या से जूझता रहा है जो कि उसे समुद्र से जोड़ने का मार्ग प्रदान करती है। | **पा. पु. – 2 पृ. स. – 131** | **1** |
| 3. | **मुबई में सूती वस्त्र मिलों की स्थापना के कारक**<br>i. गुजरात और महाराष्ट्र के कपास उत्पादक क्षेत्रों की सन्निकटता ।<br>ii. नम जलवायु ।<br>iii. उस समय मुम्बई वित्तीय केन्द्र था तथा उद्योग स्थापित करने के लिए आवश्यक पूँजी भी उपलब्ध थी ।<br>iv. परिवहन की सुविधाएँ भी प्राप्त थी । | | |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| | v. सस्ता और पर्याप्त श्रम की उपलब्धता ।<br>vi. पत्तन की सुविधाओं का होना ।<br>vii. जल विद्युत की उपलब्धता ।<br>किन्हीं दो बिन्दुओं का उल्लेख अपेक्षित । | **पा. पु. – 2 पृ. स. – 93** | **½+½=1** |
| 4. | **चतुर्थ क्रियाकलापों की महत्ता**<br>चतुर्थक सेक्टर ने आर्थिक वृद्धि के आधार पर सभी प्राथमिक व द्वितीयक से रोजगारों को प्रतिस्थापित कर दिया है । / विकसित आर्थिक व्यवस्था में आधे से अधिक कर्मी ज्ञान के इस क्षेत्र में कार्यरत हैं । | **पा. पु. – 1 पृ. स. – 61** | **1** |
| 5. | **'प्रादेशिक नियोजन' की संकल्पना**<br>किसी विशेष क्षेत्र का विकास करना । / विकास में प्रादेशिक असंतुलन को कम करना । | **पा. पु. – 2 पृ. स. – 105** | **1** |
| 6. | **भारत विश्व में लोकप्रिय पर्यटक गंतवय :**<br>भारत का पश्चिमी तट का कोष्ण होना ।/ अनुकूल जलवायुविक दशाओं का होना ।/ विरासत स्थल ।/ ऐतिहासिक स्थल ।/ मनोहारी दृश्य भूमियाँ ।/ राष्ट्रीय पार्कों ।/स्वास्थ्य सेवाओं आदि का होना ।<br>कोई दो बिन्दु | **पा. पु. – 1 पृ. स. – 61** | **½+½=1** |
| 7. | **वृद्धि और विकास में अत्तर**<br>– वृद्धि मात्रात्मक होती है, जबकि विकास गुणात्मक होता है।/<br>– वृद्धि मूल्य निरपेक्ष हे, जबकि विकास मूल्य सापेक्ष होता है।/<br>– वृद्धि धनात्मक अथवा ऋणात्मक हो सकती है जबकि विकास सदैव सकारात्मक होता है । | **पा. पु. – 1 पृ. स. – 22** | **1** |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| 8. | **बढ़ती हुई जनसंख्या और औद्योगिक विस्तारण के कारण जल का प्रदूषण**<br>i. घरेल और जलमल के अपशिष्ट जल का अनुपचारित रहना।<br>ii. कृषि में उर्वरकों तथा कीटनाशकों के अतिशय उपयोग के परिणाम स्वरूप स्वच्छ जल प्रदूषित होता है ।<br>iii. सांस्कृतिक गतिविधियाँ – मेले, पर्यटन, तीर्थयात्रा आदि।<br>iv. उद्योग कई अनचाही वस्तुओं को जल में छोड़ते हैं जो जल को प्रदूषित करती हैं।<br>v. रासयनिक अपचित और जीव–विषजल को प्रदूषित करत` है।<br>vi. जल को प्रदूषित करने वाला प्रमुख उद्योग – चमड़ा, लुगदी, कागज़ वस्त्र, रसायन, आदि है ।<br>कोई अन्य संदर्भित बिन्दु ।<br>किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है | **पा. पु. – 2**<br>**पृ. स. – 135** | **3×1=3** |
| 9. | **विश्व में सड़क परिवहन की प्रमुख समस्याएँ** –<br>i. सड़कें प्राकृतिक आपदा के दौरान तथा खराब मौसमी दशाओं में उनुपयोगी हैं ।<br>ii. यातायात की मांग को सड़क जाल पूरा नहीं कर पाता है फलतः सड़कों पर दबाव बढ़ता है ।<br>iii. सड़कों के निर्माण और उनके रखरखाव के लिए भारी निवेश की आवश्यकता होती है ।<br>iv. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु ।<br>किन्हीं तीन बिन्दुओं का वर्णन अपेक्षित । | **पा. पु. – 1**<br>**पृ. स. – 67** | **3×1=3** |
| 10. | **जनजातिय समुदायों के जीवन में 'वस्तु विनमय' के मूल्य**<br>वस्तु विनमय व्यवस्था जन जातिय समुदायों के बीच आपसी सहयोग को प्रोत्साहित करती है ।/ मिलनसार सम्बधों का बढावा देती है । | | |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| | / सहभागिता / साथ–साथ बढ़ना / सद्इच्छा / एक–दूसरे के प्रति सम्मान / शक्ति व कमजोरी / उत्पादों के मूल्य / समुदायों का कल्याण।<br>नोट– परीक्षार्थियों के दृष्टिकोण को भी विचारणीय समझा जाय ।<br>किन्हीं तीन मूलयों का वर्णन अपेक्षित । | **पा. पु. – 1<br>पृ. स. – 81** | **3×1=3** |
| 11. | **आरेख सम्बन्धित प्रश्न**<br>11.1 प्रथम वर्ग I. के कस्बों / नगरों में सबसे अधिक नगरीय जनसंख्या दिखाई गई है । (1)<br>11.2 कारण<br>i. रोजगार की सुविधाओं का होना ।<br>ii. शिक्षा<br>iii. चिकित्सा समबन्धी सुविधाएँ ।<br>iv. सुरक्षा<br>v. बेहतर संचार व्यवस्था<br>vi. जीवन सम्बन्धी सुख–सुविधाएँ<br>vii. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु ।<br>किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है । (2) | **पा. पु. – 2<br>पृ. स. – 36** | **1+2=3** |
| | **<u>दृष्टिबधित परीक्षार्थियों के लिए</u>**<br>भारतीय नगरीय बस्तियों की विशेषताए :<br>i. नगरीय बस्तियाँ सामान्यतः संहत और विशाल अकार की होती हैं।<br>ii. कुछ कस्बे और नगर विशिष्ट कार्यो में संलग्न होते हैं । ये विशिष्ट क्रियाकलापों, उत्पादों और सेवाओं के लिए जाने जाते हैं ।<br>iii. लोग गैरकृषि आर्थिक और प्रशासनिक कार्यों में संलग्न रहते हैं।<br>iv. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु ।<br>किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित । | **पा. पु. – 2<br>पृ. स. – 34** | **3×1=3** |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| 12. | **छोटे पैमाने के उद्योग और बड़े पैमाने के उद्योग में अंतर**<br>i. छोटे पैमाने के उद्योग स्थानीय कच्चे माल का उपयोग करते है, जबकि बड़े पैमाने के उद्योग विभिन्न प्रकार के कच्चे माल का उपयोग करते हैं। जिन्हें दूरवर्ती और निकटवर्ती क्षेत्रों से लाया जाता है ।<br>ii. छोटे पैमाने के उद्योग सामान्य शक्ति से चालित मशीनों का उपयोग करते हैं, जबकि बड़े पैमाने के उद्योग विकसित प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं तथा उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है ।<br>iii. छोटे पैमाने के उद्योग कुशल और अर्द्ध कुशल श्रम का उपयोग करता हैं । जबकि बडे पैमाने के उद्योग कुशल श्रम का उपयोग करते हैं ।<br>iv. छोटे पौमाने के उद्योग बड़े पैमाने पर रोज़गार उपलब्ध कराते है, जबकि बड़े पौमाने के उद्योग रोजगार के साथ बड़े पैमाने पर उत्पादन करते हैं तथा विशाल पूँजी अपेक्षित होती है ।<br>v. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु ।<br>किन्हीं तीन अन्तर स्पष्ट करने वाले बिन्दुओं का उल्लेख अपेक्षित हैं। | **पा. पु. – 1<br>पृ. स. – 49** | **3×1=3** |
| 13. | **आदिम समुदाय का प्रकृतिक पर्यावरण के साथ सामंजस्य**<br>i. आदिम समाज प्राकृतिक पर्यावरण के साथ पूर्णतः सामंजस्य बैठा कर रहता है ।<br>ii. यह अनुभव किया जाता है कि सभी प्रकरणों में प्रकृति एक शक्तिशाली बल, पूज्य, सत्कार योग्य तथा संराक्षित है ।<br>iii. सतत पोषण हेतु मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है ।<br>iv. समय के साथ लोग अपने पर्यावरण और प्रकृति की ताकत को समझने लगते हैं। | | |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| | v. मानव अपने सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के साथ बेहतर और अधिक सक्षम प्रौद्योगिकी का विकास करते हैं।<br>vi. वे अभाव की आवस्था से स्वतेत्रता की अवस्था की ओर अग्रसर होते हैं ।<br>vii. पर्यावरण से प्राप्त संसाधनों के द्वारा वे संभावनाओं को जन्म देते हैं।<br>viii. वे प्रकृति की प्रचण्डता से भयभीत होते थे ।<br>ix. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु ।<br>किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है । | पा. पु. – 1<br>पृ. स. – 3 | 3×1=3 |
| 14. | **भोजन संग्रह क्रियाएँ**<br>आधुनिक समय में भोजन संग्रह के कार्म का कुछ भागों में व्यापारीकरण हो गया है । ये लोग कीमती पौधों की पत्तियों, छाल एवं औषधीय पौधों को सामान्य रूप से संशोधित कर बाजार में बेचने का कार्य करते हैं ।<br>छाल का उपयोग कुनैन, चमड़ा तैयार करना एवं कार्क लिए, पत्तियों का उपयोग, पेय पदार्थ, दवाइयाँ एवं कांतिवर्द्धक वस्तुएं बनाने के लिए, रेशों से कपडा बनाने में करते है । दृढ़फल को भोजन एवं तेल के लिए एकत्रित किया जाता है ।<br>पेड़ के तने का उपयोग लेटेक्स (रबड़) बलाटा, गोंद बराल बनाने के लिए करते हैं ।इनका उपयोग कच्चे माल के रूप में विभिन्न उद्योगों में किया जाता है ।<br>समग्र रूप से मूल्याकन अपेक्षित है । | पा. पु. – 1<br>पृ. स. –<br>31,32 | 5 |
| 15. | **जनसंख्या का घनत्व ।**<br>लोगों की संख्या और भूमि के आकार के बीच अनुपात को जनसंख्या का घनत्व कहते है । (1)<br>जनसंख्या का धनत्व = जनसंख्या/क्षेत्रफल<br>**विश्व में जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारक ।** | | |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| | i. जल की उपलबधता<br>ii. भू–आकृति<br>iii. जलवायु<br>iv. मृदाएँ<br>उदाहरणों सहित इन चारों कारकों की व्याख्या अपेक्षित है । (4) | पा. पु. – 1<br>पृ. स. –<br>9,10 | 1+4=5 |
| 16. | **मानचित्र आधारित प्रश्न (स्वेज नहर)**<br>16.1 मिस्र (1)<br>16.2 भूमध्यसागर और लाल सागर (1)<br>16.3 हिन्दमहासागर के लिए यूराप का प्रवेश द्वारः<br>i. यह यूरोप और एशिया के बीच दूरी को कम करता है ।<br>ii. यह लिवरपूल और कोलम्बो के बीच प्रत्यक्ष समुद्री मार्ग की दूरी को उत्तमाशा अंतरीय मार्ग की तुलना में घटाता है ।<br>iii. यह समय और ईंधन की बचत करता है ।<br>iv. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु । (3×1=3)<br>किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है । | पा. पु. – 1<br>पृ. स. –<br>74 | 1+1+3<br>=5 |
| | **<u>दृष्टिबधित परीक्षार्थियों के लिए</u>**<br>16.1 मिस्र (1)<br>16.2 पोर्टसईद तथा पोर्ट स्वेज (½+½=1)<br>16.3 आर्थिक महत्त्व<br>i. यह यूरोप और एशिया के बीच दूरी को कम करता है ।<br>ii. यह लिवरपूल और कोलम्बो के बीच प्रत्यक्ष समुद्री मार्ग की दूरी को उत्ततमाशा अंतरीप मार्ग की तुलना में घटाता है ।<br>iii. यह समय और ईंधन की बचत करता है ।<br>iv. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु । (3×1=3) | पा. पु. – 1<br>पृ. स. –<br>74 | 1+1+3<br>=5 |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| | किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है । | | |
| 17. | **भारत में जलसंभर प्रबंधन और वर्षा सग्रहण की विधियाँ**<br>**जलसंभर प्रबधन**<br>i. जलसंभर प्रबंधन के अन्तर्गत बहते जल को रोकना, भौम जल का संचयन और पुनर्भरण शामिल है, जो तालाबों, पुनर्भरण कुआ आदि के द्वारा किया जाता है।<br>ii. हरियाली जलसंमर विकास परियोजना है, जसका उद्देश्य ग्रामीण जनसंख्या को पीने, सिचाई, मतस्य पालन और वन रोपण के लिए जल संरक्षण के लिए योग्य बनाना है ।<br>iii. जलसंभर प्रबंधन के अन्तर्गत सभी प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों के संरक्षण, पुनरुत्पादन और विवेकपूर्ण उपयोग को किया जाता है ।<br>iv. नीरू–मीरू कार्यक्रम आन्ध्रप्रदेश और अरवारी संसद राजस्थान में विभिन्न जलसंग्रहण संरचनाएं जैसे अत: प्रवण तालाब, रोक बाँध आदि बनाए गए हैं।<br>**वर्षा जल संग्रहण**<br>i. परम्परागत रूप से वर्षाजल संग्रहण ग्रामीण क्षेत्रों में झीलों, तालाबों, जोहड़ो, सिंचाई तालाबों आदिइ आम भण्डार खण्डों में एकत्रित किया जाता है ।<br>ii. राजस्थान में वर्षा जल संग्रहण संरचनाओं को स्थनीय रूप से कुण्ड और टंका कहते है । इनकी संरचना घरों में, घरों के निकट अथवा गाँव में वर्षा जल को एकत्रित करने के लिए किया जाता है ।<br>iii. जल संग्रहण पानी की उपलब्धता को बढ़ाता है । भूमिगत जल की उपलब्धता को बढ़ाता है तथा उसकी गुणवत्ता में सुधार लाता है । फ्लुओराइड और नाइट्रेटस जैसे संदूषकों को कम करता है । मृदा अपरदन और बाढ़ को रोकता है। तटीय क्षेत्रों में लवणीजल के प्रवेश को रोकता है । | **पा. पु. – 2**<br>**पृ. स. –** | **5×1=5** |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| | किन्हीं पाँच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है<br>नोट – प्रत्येक विधि से कम से कम दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है । | **69** | |
| 18. | **भारत के राष्ट्रीय महामार्गों की विशेषताएँ**<br>i. राष्ट्रीय महामार्गों का निर्माण एवं रखरखाव केन्द्र सरकार द्वारा कराया जाता है ।<br>ii. इन सड़कों का उपयोग अन्तर्राज्यीय परिवहन के लिए किया जाता है ।<br>iii. इनका उपयोग सामरिक क्षेत्रों तक रक्षा सामग्री एवं सेना के आवागमन के लिए होता है ।<br>iv. ये महामार्ग राज्यों की राजधानियों, प्रमुख नगरों महत्त्वपूर्ण पत्तनों तथा रेलवे जंक्शनों को जोड़ते हैं ।<br>v. राष्ट्रीय महामार्गों की लम्बाई पूरे देश की कुल सड़कों की लम्बाई की मात्र 1.7 प्रतिशत है । किन्तु ये सड़क यातायात के लगभग 40 प्रतिशत भाग का वहन करते हैं । भारतीय महामार्ग प्राधिकरण (एन.एच.ए.आई.) को राष्ट्रीय महामार्गों के विकास, रख–रखाव तथा प्रचालन की जिम्मेदारी सौंपी गई है।<br>vi. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु ।<br>किन्हीं पाँच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है । | **पा. पु. – 2**<br>**पृ. स. – 114** | **5×1=5** |
| 19. | **भारत में जनसंख्या की दशकीय और वार्षिक वृद्धि दरों का ऊँचा होना**<br>1921–1951 के दशकों में जनसंख्या की वृद्धि स्थिर रूप में आलेखित की गई । देशभर में स्वास्थ्य और स्वच्छता में व्यापक सुधारों ने मृत्युदर को नीचे ला दिया ; परन्तु जन्मदर यथावत उच्च बनी रही ।<br>1951–1981 के दशकों को जनसंख्या विस्फोट की अवधि के रूप में जाना जाता है। यह देश में मृत्यु दर में तीव्र ह्रास और जनसंख्या की | | |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| | उच्च प्रजनन दर के कारण हुआ । औसत वार्षिक वृद्धि दर ऊँची रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यही वह अवधि थी जिसमें एक एकीकृत नियोजन प्रक्रिया के माध्यम से विकासात्मक कार्यों को प्रारंभ किया गया । इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या की प्राकृतिक रूप से जन्म दर में वृद्धि हुई । फलतः वृद्धि दर उच्च बनी रही ।<br>अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास ने भी जनसंख्या की उच्च वृद्धि दर में योगदान दिया है । 1981 के पश्चात वर्तमान तक देश की जनसंख्या वृद्धि दर उच्च रही है । यद्यपि अब जनसंख्या वृद्धि दर धीरे–धीरे मंद गति से घटने लगी है फिर भी वृद्धि बनी हुई है ।<br>नोट – यदि परीक्षार्थी जनसंख्या वृद्धि को चारों प्रावस्थाओं का आधार बनाकर तर्क देकर जनसंख्या वृद्धि को प्रमाणित करता है तो उस पर भी अनुकूल विचार करना आवश्यक है ।<br>समग्ररूप में मूल्यांकन अपेक्षित है । | **पा. पु. – 2**<br>**पृ. स. –**<br>**5, 7** | 5 |
| 20. | **ऊर्जा के अपरंपरागत स्रोत**<br>i. सौर, पवन, ज्वारीय, भूतापीय और जैव ऊर्जा, ऊर्जा के अपरंपरागत स्रोत हैं । ये सभी स्रोत सतत्पोषणीय है ।<br>ii. ऊर्जा के ये स्रोत अधिक समान रूप से वितरित है । ये पर्यावरण अनुकूल हैं।<br>iii. आगे लम्बे समय के बाद सस्ती ऊर्जा उपलब्ध कराते हैं।<br>iv. पवन ऊर्जा के समान दूसरे सभी अपरंपरागत ऊर्जा के स्रोत पूर्णतः प्रदूषण मुक्त हैं।<br>v. महासागरीय धाराएँ ऊर्जा का उपरमित भंडार गृह है ।<br>vi. जैव ऊर्जा भी ऊर्जा का संभावित स्रोत है । यह लकड़ी जलावन के दबाव को कम करती है तथा वनों की बचत भी करता है ।<br>vii. भूतावीय ऊर्जा को सफलतापूर्वक लाया जा सकता है । इसे | | |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

CBSE PORTAL www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| | विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है और इसे ऊर्जा के प्रभावी स्रोत के रूप में विकसित किया जा सकता है । <br> viii. कोई अन्य संदर्भित बिन्दु । <br> किन्हीं पाँच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है । | **पा. पु. – 2 पृ. स. – 88–83** | **5×1=5** |
| 21. | **सलग्न मानचित्र को देखिए ।** <br> **दृष्टिबधित परीक्षार्थियों के लिए प्र. स. 21 के स्थान पर** <br> 21.1 नार्थ केप <br> 21.2 अदन <br> 21.3 नार्थ अप्लेशियन / महान झील क्षेत्र / अटलांटिक तट <br> 21.4 मेड़ागास्कर /सोमालिया/इथोपिया <br> 21.5 रियो डि जेनेरो /साओ पाओलो | | **5×1=5** |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

प्रश्न सं. 21 के लिए

For question no. 21

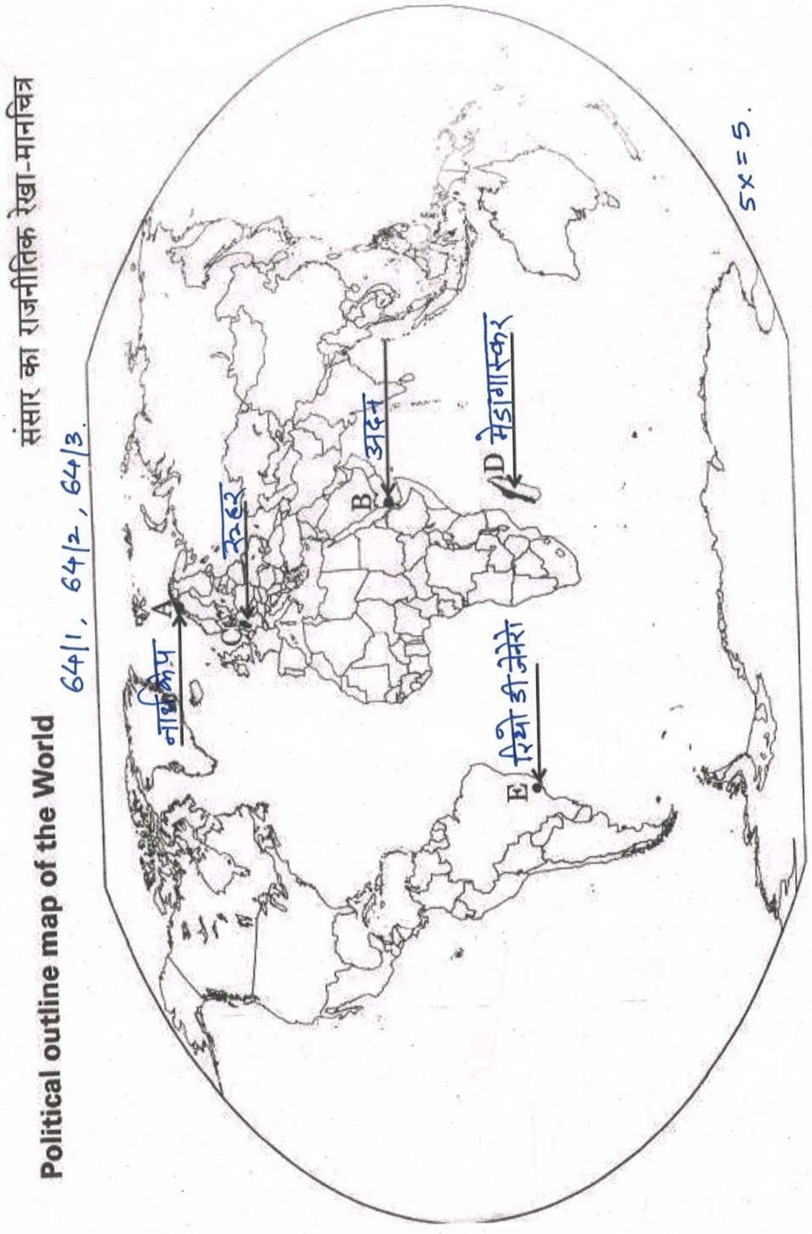






Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| 22. | **सलग्न मानचित्र को देखिए ।**<br>**दृष्टिबधित परीक्षार्थियों के लिए प्र. स. 22 के स्थान पर**<br>22.1 असम<br>22.2 मयूरमंज / केंदूझर<br>22.3 भद्रावती / विश्वेश्वरैया / विजयनगर<br>22.4 थिरूवंनथपुरम / कोच्चि<br>22.5 हिमाचल प्रदेश | | **5×1=5** |



Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE

Downloaded From : http://www.cbseportal.com



भारत का रेखा-मानचित्र (राजनीतिक)

**Outline Map of India (Political)**

64/1, 64/2, 64/3

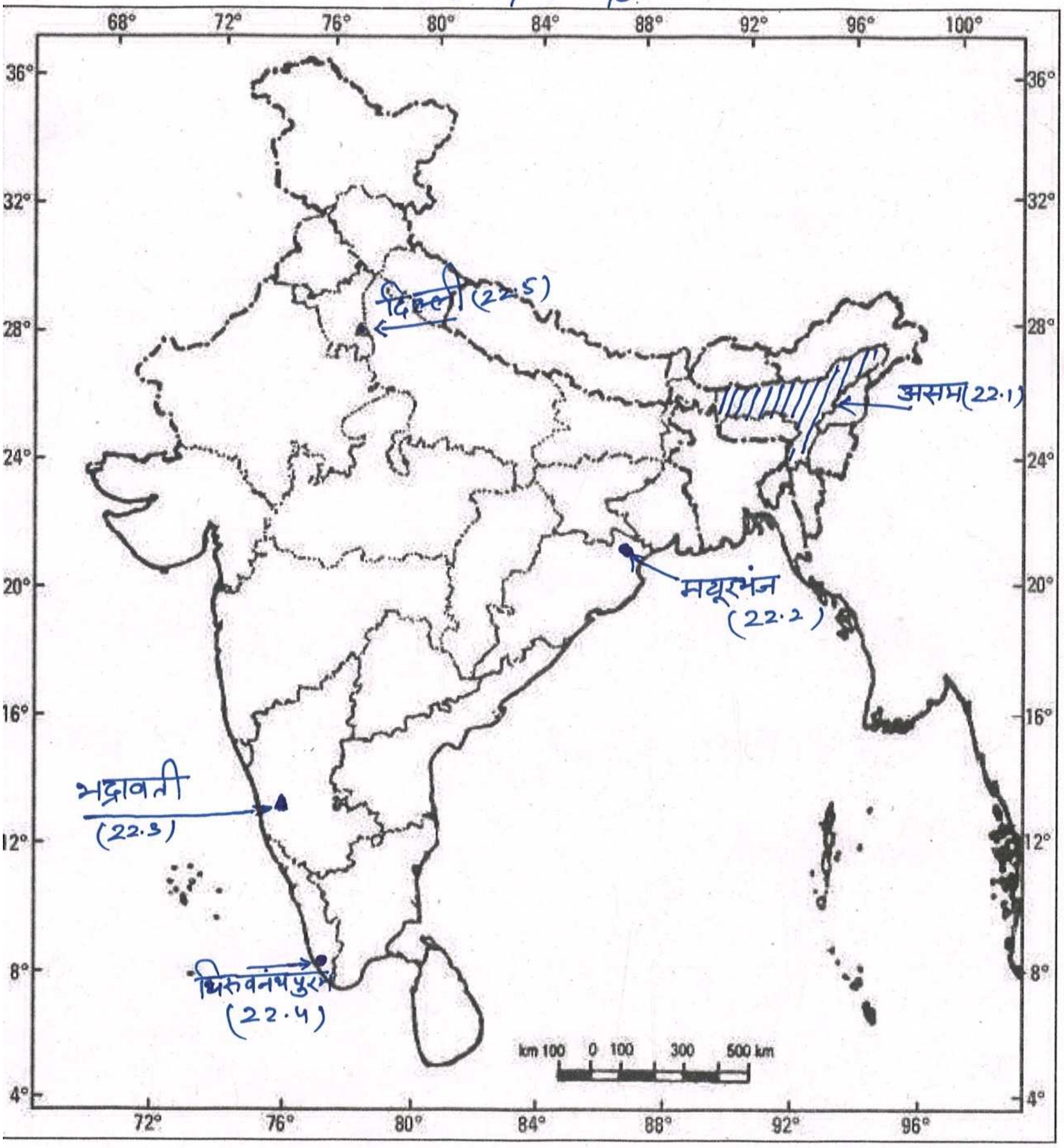


5×1 = 5





Downloaded From : http://www.cbseportal.com Courtesy : CBSE